हिस्सा लेने का मौका मिला। सामाजिक, सांस्कृतिक मुद्दों के अलावा ज्वलंत विषयों पर समाज के विभिन्न वर्गों की हस्तियों के साथ परिचर्चाओं का मौका मिला और अपनी सोच विकसित करने का भी। पढ़ाई के साथ-साथ आकाशवाणी में बीच-बीच में जाने का मौका मिलता रहा। कालेज पहुंचे तो युववाणी सुनते-सुनते उसमें कंपीयर बनने का विचार आया। फिर उसके लिए ऑडिशन दिया और फिर युववाणी के सफर की शुरुआत हुई। अपनी हमउम्र लड़कियों के साथ स्क्रिप्ट तैयार करना, मौके और फरमाइश के हिसाब से गानों का चयन करना, फिर लाइब्रेरी जाकर रिकार्ड निकालना, उन्हें सुनना, श्रोताओं के पत्र छांटना, सामान्य ज्ञान क्विज तैयार करना, न जाने ऐसे कितने काम मजे-मजे में हम करते थे और साथ में ढेर सारी बातें भीं। तब युववाणी का प्रभार संभाल रहे संजय पांडेय यानी संजय भैया हमें बातों-बातों में ही काफी कुछ सिखा देते थे। एक बार युववाणी कार्यक्रम चल रहा था, मेरे साथ संजय भैया कंपीयरिंग कर रहे थे, बारी थी सर्वश्रेष्ठ पत्र बताने की, लेकिन मैं उसकी सिग्नेचर ट्यून वाली सीडी रखना ही भूल गई थी, तब संजय भैया ने कहा, कोई बात नहीं, तुम थोड़ी देर श्रोताओं को कुछ बताते रहो , मैं आता हूं। मैं, उस दिन के विषय से जुड़ी कुछ और बातें बिना स्क्रिप्ट के करती रही, क्योंकि रेडियो पर एक मिनट की खामोशी भी बहुत लंबी होती है। इस बीच सिग्नेचर ट्यून की सीडी भी आ गई और कार्यक्रम निर्विघ्न संपन्न हुआ।

आकाशवाणी के साथ यह सफर चल ही रहा था कि 2002 में वाइस आफ अमेरिका के साथ काम करने का मौका मिला। तब छत्तीसगढ़ नया-नया राज्य बना था, और वाइस आफ अमेरिका की हिंदी सेवा इस नए प्रदेश की खबरें प्रसारित करना चाहती थीं। मैंने यहां से समाचार रिकार्ड करके भेजना शुरु किए। कभी नक्सल समस्या पर, कभी लोकसंस्कृति पर, कभी तीजन बाई का साक्षात्कार, तो कभी पल्स पोलियो अभियान की स्थिति, तमाम तरह के समाचार वाइस आफ अमेरिका के लिए भेजे। दुनिया बहुत छोटी है, इसका अनुभव भी वाइस आफ अमेरिका में काम करके हुआ। जब एक बार समाचार लेने के लिए अमेरिका से फोन आया, लाइन के दूसरी ओर राजीव शुक्ला थे।

“आकाशवाणी के साथ यह सफर चल ही रहा था कि 2002 में वाइस आफ अमेरिका के साथ काम करने का मौका मिला। तब छत्तीसगढ़ नया-नया राज्य बना था, और वाइस आफ अमेरिका की हिंदी सेवा इस नए प्रदेश की खबरें प्रसारित करना चाहती थीं।

उन्होंने मेरे उपनाम सुरजन से अनुमान लगाया कि मैं ललित सुरजन की बेटी हो सकती हूं। उन्होंने मुझसे पूछा और जब मैंने उन्हें बताया कि हां, मैं ललित जी की बेटी हूं, तो उन्होंने कहा कि पापा से मेरा नमस्कार कहना। पता चला कि राजीव शुक्ला आकाशवाणी से ही नहीं जुड़े थे, बल्कि प्रगतिशील लेखक संघ में भी सक्रिय रहे हैं और हमारे परिवार के पूर्व परिचित हैं।

वाइस आफ अमेरिका को खबरें देने का सिलसिला 2008 तक चलता रहा। फिर इराक युद्ध के कारण बढ़ते आर्थिक दबाव को देखते हुए वाइस आफ अमेरिका की हिंदी सेवा खत्म कर दी गई। लेकिन उससे जुड़े लोग जगदीश सरीन, अशोक सरीन, रश्मि शुक्ला, विजयलक्ष्मी जी आज भी याद आते हैं।। आर्थिक तंगी की यह मार मैंने रेडियो रूस में भी देखी। मास्को स्थित उसके केंद्र में मैंने समाचार वाचन के लिए ऑडिशन दिया। ल्यूदमिला नाम की एक उद्घोषिका से भी परिचय हुआ, जो पंजाबी और हिंदी पर एक जैसा अधिकार रखती थीं। उन्होंने बताया कि अभी यहां के हालात बहुत कठिन हैं, हम चाहते तो हैं कि नए लोगों को जोड़ें, लेकिन आर्थिक रूप से मजबूर हैं। उन्होंने तब आफ द रिकार्ड यह भी बताया था कि यहां कार्यरत कुछ लोग आजीविका के लिए टैक्सी भी चलाते हैं। यह 1997-98 का वक्त था, जब रूस में राजनीतिक और आर्थिक हालात काफी डगमगा रहे थे।

बहरहाल, 2008 में दिल्ली के आकाशवाणी केंद्र में राजीव शुक्ला जी से फिर मुलाकात हुई। उन्होंने तत्कालीन निदेशक लक्ष्मीशंकर बाजपेयी जी से परिचय कराया और फिर से आकाशवाणी आने का सिलसिला शुरु हो गया। कभी फोन इन, कभी साक्षात्कार तो कभी परिचर्चा, इन तमाम कार्यक्रमों में निरंतर भागीदारी होती रही और नए-नए लोगों से मिलने, बात करने का सुअवसर भी।

आकाशवाणी से जुड़ाव अगली पीढ़ी तक भी पहुंचा। एक बार रिकार्डिंग के लिए गई तो अपनी बेटी को साथ लेती गई। तब बच्चों के कार्यक्रम रंजन गुप्ता जी देखते थे, उन्होंने मेरी बेटी को देखा, और उससे पूछा कि तुम कविता पढ़ोगी? उसने हां की, तो रविवार को कविता पाठ के लिए उसे बुलाया। उसने अपनी हिन्दी पाठ्यपुस्तक से ही दो कविताएं सुनाईं। बेटी उस वक्त पहली कक्षा में थी और प्रोग्राम को पोग्राम कहती थी। उसकी वैसी ही लटपटाती जुबान और उच्चारण में रंजन जी ने उससे बच्चों के कार्यक्रम चुनमुन के लिए विज्ञापन भी करवाया। उसे पहली रिकार्डिंग के लिए 205 रुपए का चेक मिला, तो मुझे अपना 25 रुपए वाला चेक याद आ गया। 30 सालों में दो और पांच के बीच एक शून्य बढ़ गया। ■